P.G. (Sanskrit) II Sem.

CC - VI, unit-1

मेघदूत (उत्तर मेघ) • गीतिकाव्य के रूप में मेघदूत का मूल्यांकन

By
Dr. Sanjay Kumar Chaubey
(Assistant professor)
Dept. of Sanskrit
M.D. Jain college, Ara

Scanned by CamScanner

Page:
Date: / /

(1)

गीतिकाव्य के रूप में मेघदूत का मूल्यांकन

संस्कृत काव्यों की परम्परा में महाकवि कालिदास रचित मेघदूत एक प्रणयपरक गीतिकाव्य है। इसको संस्कृत गीतिकाव्यपरम्परा का आदिम ग्रन्थ माना जाता है। इसमें कवि ने धनपति कुबेर के शाप से अपनी यक्षिणी से वियुक्त होकर रामगिरि के आश्रमों में निवास करने वाले यक्ष की विरह-पीड़ित मनोदशा का मार्मिक चित्रण किया है।

संस्कृत गीतिकाव्यों का वर्ण्यविषय प्रायः प्रणय की मधुरता रहा है। कोमलकान्त पदावली, रमणीय गेयात्मक छन्द, कमनीय शब्द विन्यास, अलङ्कारों का सुरुचिपूर्ण प्रयोग तथा प्रकृति और मानव की संश्लिष्टता के माध्यम से गीतिकाव्यों में कवि अपनी वैयक्तिक-वेदना और आनन्द की अभिव्यक्ति करता है। गीतिकाव्य कवि की आत्मानुभूति का सङ्गीतात्मक शब्दचित्र है। इसमें कवि काव्यशास्त्रीय परम्पराओं से मुक्त होकर अपनी रागात्मक अनुभूतियों की स्वच्छन्द अभिव्यक्ति करता है।

भावों की कोमलता, विचारों की विशिष्टता, निरीक्षण की नवीनता और कल्पना की चारुता संस्कृत गीतिकाव्य के अद्वितीय गुण हैं। इसमें सर्वत्र प्रसाद एवं माधुर्य गुणों की अभिव्यञ्जना होती है तथा एक ही भाव-विशेष की तीव्रता का सरस, स्पष्ट एवं सामञ्जस्य पूर्ण शैली में स्वाभाविक वर्णन किया जाता है —

"गीतिकाव्यं भवेत् काव्यस्यैकदेशानुसारि च।"

इस परिभाषा के अनुसार गीतिकाव्यों में कवि द्वारा महाकाव्य के किसी एक भाव या अवस्थाविशेष का अनुकरण किया जाता है।

गीति काव्य के उपर्युक्त सभी लक्षणों से युक्त है महाकवि कालिदास रचित मेघदूत। इसमें दूरस्थ यक्षिणी के प्रति कामी यक्ष के निश्छल अनुराग की सर्वोत्तम अभिव्यक्ति हुई है। कवि ने 'कश्चिद् यक्षः' कहकर यक्ष की वेदना को सार्वजनिक बना दिया है।

मेघदूत में कालिदास ने बाह्यप्रकृति तथा अन्तः प्रकृति का मार्मिक चित्रण किया है। कालिदास

की प्रकृति चेतनाहीन या निष्प्राण नहीं है। वह सचेतन एवं भावनाशील है। प्रत्येक वर्षा ऋतु में शीतल जल-धाराओं से युक्त मेघ का संयोग प्राप्त करके निदाघ-सन्तप्त रामगिरि जब बाष्पयुक्त हो जाता है तब वह कवि को ऐसा प्रतीत होता है कि मानो वह चिर विरह-जन्य अश्रुधारा को प्रवाहित कर रहा है—

"स्नेहव्यक्तिश्चिरविरहजं मुञ्चतो बाष्पमुष्णम्॥"

कवि ने मेघ को नायक और उसके मार्ग में आने वाली नदियों को विलासिनी नायिका के रूप में चित्रित किया है। जहाँ एक तरफ निर्विन्ध्या नदी अपने विलास-प्रदर्शन द्वारा मेघ को सम्मिलन का आमन्त्रण देती है, वहीं अन्य नदी मानिनी प्रेमिका की तरह अपनी लहर रूपी भृकुटी तान लेती है। सूर्य अपनी खण्डिता नायिका कमलिनी के मुख पर से प्रालेयरूपी अश्रुकणों को प्रातःकाल पुनः उपस्थित होकर अपने किरण रूपी हाथों से पोंछता है—

प्रालेयास्त्रं कमलवदनात् सोऽपि हर्तुं नलिन्याः
प्रत्यावृत्तस्त्वयि कररुधि स्यादनल्पाभ्यसूयः।

मेघदूत की भाषा गीतिकाव्यों की भाषा के अनुरूप अत्यन्त प्राञ्जल, परिमार्जित एवं प्रवाहपूर्ण है। शब्दों के चुनाव में कवि ने विशेष कौशल दिखाया है। मन्दगति वाले मेघ को गर्व युक्त मधुर शब्द करने वाले, चातक पक्षी के माध्यम से गन्तव्य तक पहुँचने की प्रेरणा अत्यन्त स्निग्ध पदावली में दी गई है—

मन्दं मन्दं नुदति पवनश्चानुकूलो यथा त्वां
वामश्चायं नदति मधुरं चातकस्ते सगन्धः।

गीतिकाव्य के वैशिष्ट्य के अनुरूप मेघदूत में अलङ्कारों का यथास्थान उपयुक्त प्रयोग नैसर्गिक चारुता का संचार करता है। काव्य में उपमा, उत्प्रेक्षा, अर्थान्तरन्यास इत्यादि लगभग सभी अर्थालङ्कारों का समुचित प्रयोग हुआ है। वाल्मीकि के अग्र भाग से निकलते हुये दर्शनीय इन्द्रधनुष से युक्त मेघ की उपमा मयूर पिच्छ से सुशोभित गोपवेशधारी भगवान् कृष्ण से दी है जो अत्यन्त आह्लादक है—

Page :
Date: / /

(3)

येन श्यामं वपुरतितरां कान्तिमापत्स्यते ते
बर्हेणेव स्फुरितरुचिना गोपवेशस्य विष्णोः।

अचेतन मेघ से चेतन व्यक्ति सदृश सन्देश वहन की अपेक्षा करना अस्वाभाविक प्रतीत होता है किन्तु कवि ने —

"कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु।"

इस अर्थान्तरन्यास से कामार्त यक्ष के अस्वाभाविक व्यवहार को भी अत्यन्त स्वाभाविक बना दिया है।

मेघदूत में स्थान-स्थान पर अभिनव उत्प्रेक्षाओं का सुन्दर प्रयोग किया गया है। कैलासपर्वत की शुभ्र धवल हिमाच्छादित चोटियाँ ऐसी सुशोभित हो रही हैं मानों भगवान् शङ्कर के प्रतिदिन के अट्टहास की राशियाँ लगी हो —

'राशीभूतः प्रतिदिनमिव त्र्यम्बकस्याट्टहासः।'

मेघदूत की कल्पना श्रृङ्गारिक होते हुये भी इसमें शिष्ट नैतिकता का कहीं त्याग नहीं किया गया है। यक्षिणी यक्ष की विवाहिता पत्नी है, वह सहृदया, साध्वी और आदर्श पतिव्रता गृहिणी है। यक्ष दम्पत्ति का प्रणय मानवीय प्रेम का आदर्श प्रतिरूप है और दाम्पत्य प्रणय की एकनिष्ठता का मूर्तिमान प्रतीक।

कवि ने अनेक सूक्तियों के माध्यम से अमिट सख्य भाव, हृदय के औदार्य, कृतज्ञता, सज्जनता, त्याग एवं निःस्वार्थ भाव का भी सुन्दर अङ्कन किया है —

(1) याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा।
(2) मन्दायन्ते न खलु सुहृदामभ्युपेतार्थकृत्याः।
(3) आपन्नार्तिप्रशमनफलाः सम्पदो ह्युत्तमानाम्।

ये पंक्तियाँ काव्य की रमणीयता में गाम्भीर्य का सञ्चार करती हैं। संक्षेप में उदात्त कल्पना, कलात्मक सृष्टि नैपुण्य, रसानुकूल भावाभिव्यक्ति, उच्चादर्श तथा सुललित पदविन्यास आदि विशिष्ट गुणों के कारण मेघदूत 'गीतिकाव्य' कला का चरम निदर्शन है।

Scanned by CamScanner